www.shaivam.org

॥ २५ माहेश्वर मूर्त द्यान श्लोक ॥

भिक्षाटनर

शुक्लापम् शुभलोचनम् दूर्वांकुरम् दक्षिणे
वामेशूल कपाल सम्युतकरम् सत्पादुकम् पादयोः ।
लम्बत पिङ्ग जटाधरम् शशिधरम् दक्षे मृगम् वामहे
भिक्षा पात्रधरम् सकुण्डपिठरम् भिक्षाटनेशम् भजे ॥

कामारि

भस्मोद्धूळित विग्रहम् शशिधरम् गंगाफणि मण्डितम्
टंकम् कृष्णमृगम् तथानममलम् वीरासने सुस्थितम् ।
अंगे सव्यकरे परम् करतलम् विन्यस्य योगेरतम्
व्याघ्र त्वक्वसनम् ललाट जदृशा दग्धस्मरम् त्वाम् भजे ॥

कालारि

सिन्दूरापरम् त्रिनेत्रम् युगभुज सहितम् ह्युन्नुतम् शूलहस्तम्
पाशम् सुशिवहन्तम् परशुमपितथा भीष्मदंष्ट्रम् सुवक्त्रम् ।
पादम् कुञ्चित वाममुत्थेरुततलम् कालस्य वक्षस्थले
न्यस्त्वा पिङ्ग जटाधरम् पशुपतिम् कालान्तकम् नौम्यहम् ॥

कल्याण सुंदरर

सिन्दूरापरम् त्रिनेत्रम् युगभुजसहितम् हारकेयूर भूषम्
दिव्यैर वस्त्रैर वृतांगम् वरसमुचितलसत् वेषयुक्तम् शुभांगम् ।
वन्दे कल्याणमूर्तिम् करतलकमले देविहस्तम् तथानम्
हस्ते टंकम मृगञ्च तततमधवरम् बद्दगंगेन्दु चूडम् ॥

ऋषभारूढर

सव्येस्यात् वक्रदण्डान्वित कटक करम् गोपतेः पृष्ठ संस्थम्
वामस्यार्तम् सदक्षम् वरकरयुगळे टंक कृशणम् तथानम् ।

फालस्थाक्षम् प्रसन्नम् त्रिनयन सहितम् बद्द वेणी किरीटम्
वामे गौर्या समेतम् नमत शुभकरम् तं वृषारूढमीशम् ॥
 चंद्र शेखरर
अभय वरद हस्तम् सौम्य शृंगार भावम्
विपुल वदन नेत्रम् चन्द्र बिंबांग मौळिम् ।
ऋजुतनु समपादस्थानकम् विद्रुमापम्
हरिण परशु पाणिम् पद्मपीठोपरिस्थम् ॥
 उमा महेश्वरर
धवळाप सुखासन सन्निहितम्
मृग डिंबक टंक वराभयदम् ।
सुमुखम् परमुत्पलधृक् वरदम्
उमया सहितम् प्रणमामि भवम् ॥
 नटराजर
एकास्यन्तु चतुर्भुजम् त्रिनयनम् वामेतु धुर्धूरकम्
चन्द्रम् पत्र शिखि प्रसारित करम् चोर्ध्वम् पदम् कुञ्चितम् ।
सव्ये स्वस्तिक कुण्डलम् डमरुकम् गंगाभयेपिप्रदम्
वन्दे कीर्णजटम् नटेशमनिशम् ह्यपस्मार देहेस्थितम् ॥
 त्रिपुरारि
रक्तापम् परिपूर्ण चन्द्रवदनम् कृष्णम् मृगम् कार्मुकम्
वामे सव्यकरे शरञ्च तथतम् टंकञ्च देव्यायुतम् ।
गंगाचन्द्र कलाधरम् हरिविरिञ्चाद्यैस्सदा सेवितम्
हासैर्दग्ध पुरत्रयम् त्रिभुवनाधीशम् पुरारिम् भजे ॥
 जलन्दरारि
रक्तापम् उग्र गमनम् त्रिविलोचनाभयम्
टंकासि कृष्ण मृग चाप सुशोभि हस्तम् ।
भूमिस्थ चक्र धरणोद्ध जलन्धरस्य

कण्ठग्न माभज जलन्धर हरस्वरूपम् ॥

मातंगारि

स्थित्वा हस्ति शिरस्त दक्षचरणम् वामांग क्षोतृदम्
पुच्चोर्त्वावृत चर्म उद्धृतकरम् शूलासि शरुङ्गोज्वलम् ।
टंकम् कृष्णम् धरम् वरकरम् भीष्माननेन्दु प्रभम्
वामोमाति भयोन्मुखी सुतयुतम् सूच्यात्य हस्तम् हरम् ॥

कराळर

चतुर्भुजम् त्रिनेत्रञ्च जटामकुट सम्युतम्
दक्षिणे खड्गबाणञ्च वामे चाप गदाधरम् ।
दम्ष्ट्रा कराळ वदनम् भीमम् भैरव गर्जितम्
भद्रकाळि समयुक्तम् कराळम् हृदि भावये ॥

शङ्कर नारायणर

सव्यांगे विदृमापम् शशिधर मकुटम् भस्मरुद्राक्ष भूषम्
वामांगे श्यामलापम् मणिमकुटयुतम् पीतवस्त्रादि शोभम् ।
सव्ये टंकाभयम् स्यातितर करयुगे शंख कौमोदकी च
किंचिल्ललाट नेत्रम् हरिहरवपुषम् संततम् नौमि शंभुम् ॥

अर्ध नारीश्वरर

पुम्स्त्रीरूपधरम् तनौशशि जटा टंकारुणापम् पणिम्
व्याघ्र त्वक्वसनम् प्रकोष्ठ वृषभम् वक्रांघ्रिकम् दक्षिणे ।
वामे श्यामल वरोत्पलालककुच क्षौमर्जु पादांबुजम्
द्हेम विभूषणाति रुचिरम वंदे अर्धनारीश्वरम् ॥

किरातर

कृष्णांगम् द्विभुजम् धनुच्चरधरम् मुत्तालकम् सुस्थितम्
क्रूराक्षिद्वय सम्युतम् विपुलसत्वक्त्रम् ह्युरोविस्तृतम् ।
शीर्षे पिंछधरम् सुगन्ध कुसुमम् शार्दूल चर्माम्बरम्
बद्द व्याळ विराजितोधरमहम् ध्यायेत् किरातम् हरम् ॥

कंकाळर

रक्तापम् स्मितवक्त्रम् इन्दुमकुटम् वामेतु दोर्दण्डके
त्र्यक्षम् वेदकरांबुजम् सदधृतेः कंकाळ वीणाधरम् ।
सव्ये यष्टिधरम् परे डमरुकम् सव्यापसव्य क्रमात्
टंकम् कृष्णमृगम् कंकाळदेवम् भजे ॥

चण्डेश अनुग्रहर

चण्डेशम् पीतवर्णम् युगकरसहितम् दक्षहस्तेरत टंकम्
पिप्राणम् कृणसारम् वरकर सहितम् पार्वती वामभागम् ।
चण्डेशस्योत् तमांगम् प्रतिनिहितकरम् दक्षभागे त्रिनेत्रम्
सर्वालङ्कार युक्तम् शशिशकलधरम् गंगयायुक्त मीडे ॥

चक्र प्रदर

विष्णुस्द्धीश पुरस्थितो रंजलिकरो देवस्य पादाब्जयोः
अभ्यर्च्याक्षिलसत् सहस्रकमलम् सम्प्राप्तवान् ईश्वरात् ।
यस्माच्चक्रमतोवरम् पशुपतेः पद्माक्ष इत्याज्ञया
टंकम् कृष्णमृगम् वरम् परकरात् चक्रप्रदम् तम् भजे ॥

सह उमा स्कंदर

उद्यत् भानुनिभम् चतुष्करयुतम् केयूरहारैर्युतम्
दिव्यम् वस्त्रधरम् जटामकुटिनम् संशोभि नेत्रत्रयम् ।
वामे गौर्युतम् सुगन्धमुभयोर मध्ये कुमारम् स्थितम्
सोमास्कंद विभुम् मृगाभयवरम् टंकम् तथानम् भजे ॥

एकपादर

ध्यायेत् कोटिरविप्रम् त्रिनयनम् शीताम्शु गंगाधरम्
हस्ते टंकम् मृगम् वराभयकरम् पादैकयुक्तम् विभुम् ।
शम्भोर्दक्षिण वामगक्षभुजयोर् ब्रह्माच्युताभ्यांयुतम्
तत्तल्लक्ष्ण मायुधैः परिवृतम् हस्तत्वयाट याञ्जलिम् ॥

विघ्नेश अनुग्रहर

टंकम कृशणमृगम् तथानममलम् प्रालम्बि सव्यांघ्रिहम्
वामे निधृतपाद मिन्दु सदृशम् त्रयक्षम् जटाशेखरम् ।
वामांगे धृत विघ्नराजमितरम् तन्मूर्ध्नि विन्यस्यतत्
प्रीत्यानुग्रहम् त्रिपुण्ड्रधरणम् विघ्नप्रसादम् भजे ॥

दक्षिणामूर्ति

पादेनाक्रम्य भूतम् तदुपरिगुणितम् पादमेकम् निधाय
व्याकुर्वन् सर्वशब्दान् निजकटक महीभागबाजाम् मृगाषीणाम् ।
व्याळम् व्याख्यानमुद्राम् हुतवहकलिकाम् पुस्तकम् चाक्षमालाम्
बिभ्रत दोर्पिस्चतुर्भिस् स्फुरतु ममपुरो दक्षिणामूर्तिरीशः ॥

श्री नीलकण्ठर

अभयवरद हस्तम् टंक सारङ्ग युक्तम्
शशिधरमहिभूषम पीत वस्त्रम त्रिनेत्रम ।
शिवमसितकळाव्यम तम वृषारूढ देवम
विषहरणक मीशम चित्र पिञ्छाव्य रूपम ॥

सुखासनर

शान्तम श्वेतम त्रिनेत्रम रसभुजसहितम कुण्डलोत्पासि कर्णम
दण्डम घण्टाम कुरङ्गम्परशु पणिधराभीतिकम दक्षवामैः ।
पिप्राणम वामपादम शयितमथपरम लम्बिभूतस्त पादम
वामे गौर्यासमेदम शशिधरमकुटम तम सुखासीनमीडे ॥

लिङ्गोद्भवर

देवम गर्भगृहस्य मानकलिते लिङ्गे जटाशेखरम
कव्यासक्तकरम परैस्च तततम कृष्णम मृगञ्च चाभयम ।
सव्ये टंकममेय पादमकुटे ब्रह्माच्युताभ्याम युतम
ह्यूर्ध्वातस्थित हंस कोलममलम लिङ्गोद्भवम भावये ॥

www.shaivam.org